Issue: 151
06 Sept. 2020

जैनाचार

www.jainachar.com
Daily

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

x|# d|Egkj] f'k"; d|Hk g] ?k<| ?k<| ekj| pkV

प्रतापगढ बगवास त्रिमूर्ति पंच बालयती दिगंबर तीर्थ क्षेत्र में विराजमान विश्व के दूसरे बड़े चतुर्विध संघ के नायक राष्ट्र गौरव चतुर्थ पट्टाचार्य श्री सुनील सागर जी के श्रीमुख से से जन–जन को पहुंचाने के लिए जिनवाणी चैनल एवं online माध्यम से दिए जा रहे प्रवचन में गुरुवर ने अपनी अमृतवाणी में कहा कि,

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वर,
गुरु साक्षात परम ब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः
गुरु ही सिखाते हैं, गुरु ही समझाते हैं,
गुरु ही आत्मा को परमात्मा से मिलाते हैं।

ज्ञानियों दुनिया में सबसे बड़ा कोई है तो वो है गुरु, गुरु सृष्टि की रचना करने वाला सृष्टि का सर्व धन, पालन करने वाला है। इस विषय में एक कथानक भी प्रसिद्ध है।

किसी ने कहा हिमालय सबसे बड़ा है, हिमालय बड़ा है तो हनुमान जी के हथेली में क्यों खड़ा है, हनुमान जी बड़े हैं तो राम जी के चरणों में क्यों पड़े हैं, और श्री राम बड़े हैं तो विशिष्ट गुरु के चरणों में क्यों पड़े हैं, इसलिए ज्ञानियों संसार में सबसे प्रथम उचित स्थान पर है तो वह है गुरु। संसार के सबसे प्रथम शिक्षक भगवान आदिनाथ प्रथम गुरु है। वैसे भी प्रत्येक धर्म में भगवान हो ना हो पर गुरु जरूर होता है। आदि गुरु ने अपनी दोनों पुत्रियों को ब्राह्मी और सुंदरी को ब्राह्मी लिपि व सुंदरी को अंक लिपि पढ़ाई। इन्हीं लिपियों के द्वारा हम जैसे सामान्य मनुष्य अपना विकास कर विशेष पद पर प्रतिष्ठित हो रहे हैं।

गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है घड़ घड़ मारे चोंट, अंतर हाथ सहाय देत बाहर देते चोंट।

आज डॉक्टर सर्वपल्ली राधा कृष्ण का जन्मदिन है जो भारत के राष्ट्रपति रहे हैं। एक साधारण शिक्षक से राष्ट्रपति के पद पर पहुंचने वाले विलक्षण व्यक्तित्व के स्वामी डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा समाज एवं राष्ट्र सेवा में दिये गए योगदान के कारण डॉ साहब के रूप में गुरु को सम्मान देते हुए भारत सरकार द्वारा 5 सितंबर को शिक्षक दिवस घोषित किया गया। शिक्षक के बिना जीवन का उत्थान नहीं हो सकता।

युवाओं एक शिक्षक हजारों डॉक्टर्स, इंजीनियर व कलेक्टर तैयार कर देते हैं पर हजारों कलेक्टर मिलकर भी एक शिक्षक तैयार नहीं कर सकते हैं इसलिए हर स्कूल में से शिक्षक तैयार होना ही चाहिए। विद्यार्थियों! गुरु तो कुम्हार है और आप मिट्टी हो इसलिए खुद को मिट्टी समझ कर गुरु चरणों में समर्पित हो जाओ। आपको कुंभ कलश बनना है तो चोट के बिना खोट नहीं निकल पाएगी।

जो पत्थर चोट सहा नहीं वह बिखरा और कंकर बन गया।
जो पत्थर चोट सह गया वह निखर कर तीर्थंकर बन गया।

जिस वक्त गुरु रूपी कुम्हार शिष्य रूपी कुंभ पर चोट मारता है तो उस कुंभ के अंदर वात्सल्य का हाथ लगाते हैं और बाहर से चोट देते हैं। आपको बाहर की चोट दिखती है पर अंदर का वात्सल्य का हाथ का अनुभव नहीं दिखता है। शिक्षक के भाव को समझ कर भव पार होने की शिक्षा को ग्रहण कर अपना ऊस्थान करें इसी मंगलमय भावना के साथ प्रथम गुरु आदिनाथ की जय!!!

स्वस्ति श्री जीनसेन भट्टारक स्वामीजी - नांदणी

n'k y{k.k] "kkM'kdj.k] ipe:] jRu=;] vur or vkfn or djd ...,,] f^]få]‡]...]f miokl] ,dk'ku dh riL;k dju okys lHkh Jkod vkj Jkohdkvk dk LofLrJh ftulu Hkêkjd iêkpk;l egkLokeh tlu eB ukn.kh--
bud vkj l vuekfnuk
iT; Lokeh th d vkj l vkf'kokn

çnhidekj flg dklyhoky bnkj dk fuèku

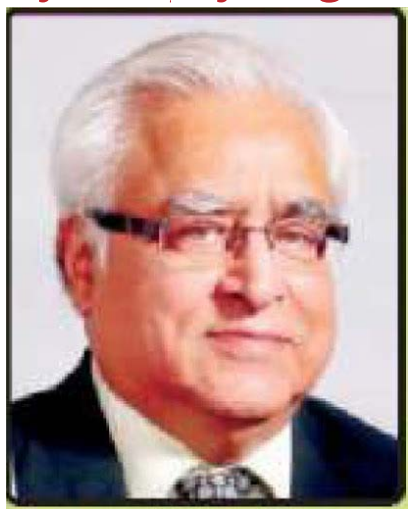

दिगम्बर जैन समाज के आधार स्तंभ, हम सभी के मार्गदर्शक, अनेको संस्थाओं मै प्रमुख, वे जैन जागरूकता जनगणना अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय श्री प्रदीपकुमार सिंह जी कासलीवाल का निधन हो गया है

बहुत ही दुखद समाचार है, मन व्यथीत है, हम सभी भगवान से यह प्रार्थना करते है कि उन्हे अपने श्री चरणो में स्थान प्रदान करै एवं कासलीवाल परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें...

भावपूर्ण श्रद्धांजलि...
सतीश जैन (इला बैंक) ,इंदौर

vkf;dk Jh fn0;efr ekrkth dk gvk lLrjkjkg.k & ;Fkk uke rFkk x|.k

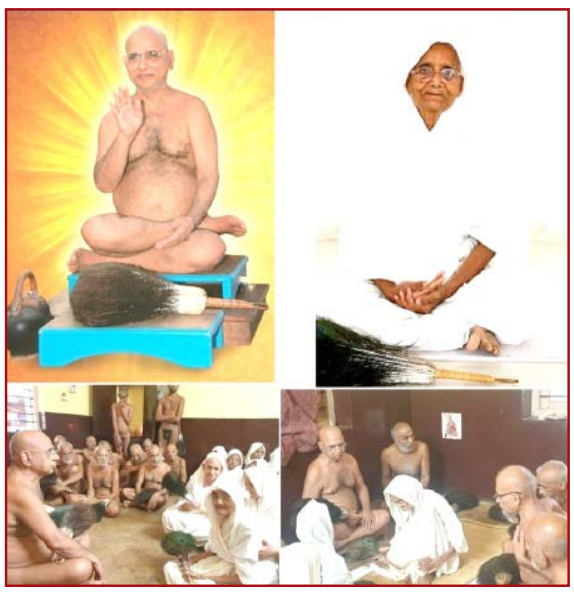

बीसवीं सदी के प्रथम दिगंबराचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्ति सागर जी महाराज की अक्षुण्ण परम्परा के पंचम पट्टाधीश और २१वीं सदी के श्रेष्ठ एवं महान निर्यापकाचार्य वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज की संघस्था नियम सल्लेखना धारी परम् पूज्य आर्यिका श्री दिव्य मति माताजी का दिनांक 4 सितंबर २०२० को कर्नाटक के बेलगाम की पावन भूमि पर संस्तरारोहण किया गया। पूज्य आर्यिका माताजी ने १२ वर्ष पूर्व आसोज सुदी दशमी को सम्मेद शिखर तीर्थ पर अपनी क्षुल्लिका दीक्षा के समय ही १२ वर्ष की सल्लेखना को धारण कर लिया था।

पूज्य आर्यिका माताजी का जन्म भारतवर्ष की मरुधरा, राजस्थान के लाडनूँ में गणेशमल जी नेमा देवी पहाड़िया के घर पर हुआ। और उनका नामकरण किया गया पान्ना देवी। माता पिता के धार्मिक संस्कारों का उनके जीवन पर अतिशय प्रभाव पड़ा। छोटी अवस्था में ही पान्ना देवी ने बीसवीं सदी के प्रथम दिगंबराचार्य महान तपस्वी चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्ति सागर जी महाराज की सल्लेखना के समय कुंथलगिरि में उनके दर्शन किए। पान्ना बाई का विवाह सुजानगढ़ निवासी बाबूलाल जी सेठी के साथ संपन्न हुआ। गृहस्थ अवस्था में रहते हुए पान्ना बाई ने अपने धार्मिक संस्कारों को और दृढ़ करना प्रारम्भ कर दिया और वो मुनियों को आर्यिका माताजी आदि को आहार आदि देने में विशेष रूचि लेने लगी। परम पूज्य गणिनी आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी के पूर्वोत्तर विहार काल में पान्ना बाई के धार्मिक संस्कारों को और मजबूती मिली। उन्होंने अपने जीवन काल में आचार्य शान्ति सागर जी महाराज की परम्परा के समस्त आचार्यों के और बीसवीं सदी के लगभग सभी महान दिगंबर जैनाचार्यों के दर्शन करने का पुण्य लाभ लिया। पूज्य आर्यिका माताजी की प्रेरणा और मार्गदर्शन में पान्ना देवी तप और साधना के मार्ग में बढ़ने लगी और व्रत उपवास आदि करने लगी।पति के वियोग के पश्चात् वो पूर्णतया धर्म मार्ग में रत रहने लगी और मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।

गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमती माताजी की सद्प्रेरणा से वो आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज की शरण में आई और फिर सन 2008 में सम्मेदशिखर की पावन भूमि पर क्षुल्लिका दीक्षा धारण की और सन 2010 में कोलकाता महानगरी में विशाल जन समूह के समक्ष आर्यिका दीक्षा धारण की। आचार्य भगवन ने नामकरण किया आर्यिका दिव्य मति। अपने नाम के अनुसार ही आर्यिका श्री ने मनुष्य भव को दिव्य बनाने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया। दीक्षा के साथ ही आर्यिका श्री ने आहार में केवल तीन रस लेने का नियम ले लिया और चार धान गेहूँ, चावल, मूंग और तुहर रख कर बाकी धान का आजीवन त्याग कर दिया। सन २०१६ में सिद्धवर कूट में चातुर्मास के दौरान आर्यिका श्री ने नियम सल्लेखना के व्रत को आगे बढ़ाना प्रारम्भ कर दिया और पर्व आदि पर एकांतर उपवास करने लगे। फिर श्रवणबेलगोला श्री क्षेत्र पर गोम्मटेश्वर भगवान् बाहुबली के दर्शन कर आर्यिका श्री को मानो अपनी आत्मा के दिव्य तेज को प्राप्त करने की इच्छा प्रबल हो उठी और बाहुबली सम तपस्वी बनकर मोक्ष पथ पर बढ़ने की ठान ली। चातुर्मास के दौरान से वे एक उपवास एक पारणा और कभी कभी बेला तेला करने लगे। फिर सन्ने सन्ने आहार में दो रस और फिर एक ही रस लेने का नियम ले लिया। फिर बेलगाम चातुर्मास के दौरान नियम सल्लेखना का समय पूर्ण होता जानकर अनाज का आजीवन त्याग कर दिया और श्रावण मास में घी और दूध का भी आजीवन त्याग कर दिया। हाल ही में भाद्रपद में माताजी ने दसलक्षण व्रत उपवास किये। नियम सल्लेखना की पूर्णता को निकट जान निर्यापक आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज ने दिनांक 4 सितम्बर को आर्यिका श्री का चतुर्विध संघ के सामने देव शास्त्र गुरु की साक्षी पूर्वक संस्तरारोहण किया। संस्तरारोहण अर्थात जिस क्षपक की समाधि का समय निकट आ गया है वह उत्कृष्ट क्षपक (समाधि साधक) जिस पर लेटता है उसे संस्तर कहते है और जब क्षपक इस संस्तर को स्वीकार कर लेता है तो उस क्रिया को संस्तरारोहण कहते है।

अपने जीवन काल में माताजी ने अनेक उपवास व्रत आदि किये, जो निम्न प्रकार है।

दसलक्षण व्रत – 6 बार, अष्टाह्निक व्रत – 4 बार, चारित्र शुद्धि के 1234 उपवास, नंदीश्वर व्रत के 56 उपवास, तत्वार्थ सूत्र के 11 उपवास, चौरासी लाख योनि के 84 उपवास, सम्मेदशिखर व्रत के 24 उपवास, भक्तामर के 48 उपवास, दिव्य पंक्ति के 204 उपवास, सहस्र नाम के 11 उपवास, 13 प्रकार के चारित्र के 13 उपवास, चन्द्रप्रभ व्रत के 8 उपवास और कई बेले तेले आदि किये।इस प्रकार पूज्य माताजी ने अनेक व्रत उपवास को धारण किया।

आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज की जय....क्षपक आर्यिका श्री दिव्य मति माताजी की जय।

राकेश सेठी कोलकाता 9830255464

32 miokl dk ikj.kk lEiUu

आसपुर के समीपस्थ पारडा इटीवार गाव मे दिगम्बर जैन समाज के युवा किर्ती कुमार सिंघवी उम्र 33 वर्ष द्वारा जैन धर्म के सोलह कारण पर्व के अवसर पर उत्तम तप के प्रतीक 32 उपवास गुरूवार को पूर्ण हुए। समाज के प्रतिष्ठाचार्य विनोद पगारिया ने बताया कि वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव के आशीर्वाद से सम्पन्न इन 32 उपवास का पारणा शुक्रवार 4 सितम्बर को प्रातः जिनेन्द्र भगवान की अभिषेक पूजा विधि के बाद समाज जनों, परिजनो की उपस्थिति मे सम्पन्न हुआ, 32 उपवास के तहत तपस्वी द्वारा पूर्णतया निराहार रहकर में दिन मे मात्र एक बार गर्म पानी का सेवन किया गया।

विनोद पगारिया सागवाड़ा 9460243820